मंचीय कविता की परंपरा – एक

डॉ. गोविन्द प्रसाद वर्मा
(सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी(बिहार)- 845401
Email: govindprasadverma@mgcub.ac.in

स्नातकोत्तर हिंदी, द्वितीय सेमेस्टर
प्रश्नपत्र: लोकप्रिय साहित्य और संस्कृति (HIND 4018)

विषय-सूची

- मंचीय कविता की परंपरा
  - भारतेंदु – पूर्व मंचीय कविता
  - भारतेंदु युग की मंचीय कविता
  - द्विवेदीयुगीन मंचीय कविता
  - छायावाद की मंचीय कविता
  - छायावादोत्तर मंचीय कविता
- निष्कर्ष
- संदर्भ-ग्रंथ-सूची

❖ मंचीय कविता की परंपरा

- काव्य-सृजन, वाचन की परंपरा और सभ्यता का आदिकाल
- साहित्य के मुख्य पक्ष हैं : लेखक – कृति – आस्वादक

  ↓

  लोकप्रिय साहित्य में प्रकाशक और वितरण

- लिखित साहित्य – व्यक्तिगत
- मौखिक साहित्य – सामुदायिक

▪ मंचीय कविता की विशेषताएँ

- काव्य-पाठ शैली में प्रभावोत्पादकता
- विषय-वस्तु को मूर्त करने हेतु हाव-भाव प्रदर्शन की कला
- कविताओं की कंठस्थता
- प्रत्येक वर्ग के अनुरूप भाषा-चयन
- आकर्षक व्यक्तित्व

भारतेंदु – पूर्व मंचीय कविता

- प्राचीन ग्रंथों में सभा – समितियाँ और सामाजिक
- नाट्यशास्त्र : नाट्य-मंचन और आस्वादन का साक्ष्य
- कामशास्त्र : गोष्ठी समवाय और नागरक
- कालिदास का समय और कला प्रदर्शन
- दंडी का काव्यादर्श और विदग्ध गोष्ठी

भारतेंदु – पूर्व मंचीय कविता ....

- आचार्य वामन और महाकवियों की प्रतिष्ठा
- काव्य-मीमांसा और कवि शिक्षा
- हिंदी का आदिकाल और चारण-परंपरा
- मध्यकालीन हिंदी कविता : कवि और श्रोता
- उर्दू-मुशायरे : शायर,शायरी और राजसत्ता

▪ भारतेंदु युग की मंचीय कविता

- कविता ‘श्रव्य’ से ‘पठ्य’ की ओर’
- भारतेंदु युग : आधुनिक कवि-सम्मेलनों का आरंभ
- भारतेंदु युग और पढंत-गोष्ठियाँ
- काशी और भारतेंदु-मंडल
- मंचीय कविता के प्रमुख कवि और केंद्र

भारतेंदु युग की मंचीय कविता ...

- कंठस्थ परंपरा और आशु कविता
- कवि-सम्मेलन और रस
- राष्ट्रीय प्रेम, लोक जागरण और सामाजिक समस्याएँ
- ब्रजभाषा और खड़ी बोली का संगम
- हिंदी का प्रचार-प्रसार - 'निज भाषा उन्नति अहै ...'

▪ द्विवेदीयुगीन मंचीय कविता

- मंचीय कविता और सभा-समितियाँ
- खड़ी बोली हिंदी की प्रतिष्ठा
- हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार

▪ द्विवेदीयुगीन मंचीय कविता ...

➢ **कवि-सम्मेलन और राष्ट्रीय-चेतना -**

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाँऊ.

...

मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक,

मातृभूमि पर शीश चढाने जिस पथ पर जाएँ वीर अनेक |

- माखनलाल चतुर्वेदी

▪ द्विवेदीयुगीन मंचीय कविता ...

➢ **मंचीय कविता और सांस्कृतिक-संरक्षण -**

अंकित है इतिहास पत्थरों पर जिनके अभियानों का,

चरण-चरण पर चिह्न यहाँ मिलता जिनके बलिदानों का |

- रामधारी सिंह दिनकर

जिसने जग को था मुक्ति-मार्ग दिखालाया

जिसने उसको था कर्मयोग सिखलाया | - गोपालशरण सिंह

▪ द्विवेदीयुगीन मंचीय कविता ...

➢ **सामाजिक क्रांति और कुरीति-निवारण :**

समाज में ऊँच-नीच की भावना -

सभी जाति से प्यार है, वे जताते |

सभी देश से नेह है वे निभाते |

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

द्विवेदीयुगीन मंचीय कविता ...

‘अछूत’ कविता में छुआछूत -

एक ही विधाता के अमृत पुत्र, एक देश, / कुछ यों अपूत, कुछ पूत कैसे हो गये ?

सबकी नसों में रक्त एक ही प्रवाहित है, / कुछ देव-दूत, कुछ भूत कैसे हो गये ?

बंधु श्री वशिष्ठ व्यास विदुर पराशर के, / वाल्मीकि – वंशज अछूत कैसे हो गये ?

- गयाप्रसाद शुक्ल ‘सनेही’

- ## द्विवेदीयुगीन मंचीय कविता ...

विविधता में एकता -

हिंदू, मुसलमान,ईसाई, / बौद्ध, पारसी, जैनी भाई,

मंदिर, मूरत, तीरथ, मस्जिद, / मक्का, प्राग, हज्ज, गुरुद्वारा |

प्यारा हिंदुस्तान हमारा |

- श्रीधर पाठक

- ## द्विवेदीयुगीन मंचीय कविता ...

अंग्रेजी नौकरशाही पर व्यंग्य -

नौकरशाही दे चुकी है भारत ! तुझे स्वराज |

डाल न आशा आग में, असहयोग का राज ||

- नाथूराम शंकर शर्मा

- ## द्विवेदीयुगीन मंचीय कविता ...

सामाजिक विषमता -

भूख-भूख चिल्लाय, कभी बालक रोते हैं |

टुकड़े सौ – सौ हाय, कलेजे के होते हैं |

- गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'

- छायावाद की मंचीय कविता

- हिंदी साहित्य सम्मेलन : विराट कवि सम्मेलन
- मंचीय कविता और हिंदी का उत्कर्ष
- स्वाधीनता आंदोलन की साहित्यिक अभिव्यक्ति

- छायावाद की मंचीय कविता ...

राष्ट्रीय चेतना -

वेदना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा भी मिला लो |

....

जब हृदय का तार बोले, श्रृंखला के बंद खोले |

हो जहाँ बलिशीश अगणित, एक शीश मेरा मिला लो |

- सोहनलाल द्विवेदी

- ## छायावाद की मंचीय कविता ...

सांस्कृतिक दृष्टि -

दो विजये ! वह आत्मिक-बल दो
वह हुँकार मचाने दो
अपनी निर्बल आवाजों से,
दुनिया को दहलाने दो |

- सुभद्रा कुमारी चौहान

- छायावाद की मंचीय कविता ...

जागो फिर एक बार -

तुम हो महान / तुम हो सदा महान

है नश्वर यह दीन-भाव / कायरता काम-परता

ब्रह्म हो तुम / पद-रज भर भी है नहीं

पूरा यह विश्व-भार / जागो फिर एक बार |

- सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’

छायावादोत्तर मंचीय कविता

- मंचीय कविता में राष्ट्रीयता : विदेशी शासन के प्रति घृणा, विद्रोह-भावना और स्वराज
- प्रगतिवाद : शोषण, उत्पीडन, सामंतवाद, साम्राज्यवाद और पूँजीवाद का विरोध
- प्रगति-प्रयोग : काव्य-पाठ, अनाकर्षक शैली
- प्रयोगवाद की असफलता प्रयोगधर्मी कठिन भाषा

▪ छायावादोत्तर मंचीय कविता ...

- मांसल प्रणय : विरह-मिलन, रूप-सौंदर्य
- गीत काव्य : बच्चन और नेपाली
- हास्य-व्यंग्य : बेढब बनारसी और अन्य

❖ निष्कर्ष

- भारतेंदु युग से आधुनिक कवि-सम्मेलनों का आरंभ
- भारतेंदु युग से छायावादोत्तर मंचीय कविता तक राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना क्रमशः तीव्र
- सामजिक विषमता और जन-जागरण
- श्रृंगार, वीर और हास्य-व्यंग्य की सर्वाधिक अभिव्यक्ति
- खड़ी बोली हिंदी का विशाल श्रोता वर्ग और हिंदी भाषा की प्रतिष्ठा

❖ संदर्भ-ग्रंथ–सूची

- हिंदी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
- हिंदी साहित्य का इतिहास : (सं.) डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा
- हिंदी कवि-सम्मेलनों और मंचीय कवियों का साहित्यिक योगदान : विशेष लक्ष्मी वीणा, प्रगति प्रकाशन, आगरा
- साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका : मैनेजर पांडेय, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, चंडीगढ़

धन्यवाद !